शिवानी की जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी

साहित्यकारों ने हिन्दी कथाकार के क्षेत्र में उनके योगदान पर प्रकाश डाला

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। हिंदी कथाकार शिवानी की जन्मशताब्दी के अवसर पर कुमाऊं विश्वविद्यालय की महादेवी वर्मा सृजन पीठ और साहित्य अकादमी, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

संगोष्ठी का विषय था शिवानी का कथा साहित्य: संवेदना और शिल्प, जिसमें वरिष्ठ साहित्यकारों और शिक्षाविदों ने शिवानी के लेखन और उनके समाजिक-सांस्कृतिक योगदान पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और शिवानी के चित्र पर माल्यार्पण से हुई। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. दिवा भट्ट ने कहा शिवानी का जीवन और उनका साहित्य दिखाते हैं

कि किस तरह पिछली सदी में स्त्री स्वाधीनता की खामोश लड़ाई शुरू हुई थी। उनकी नायिकाएं कभी हार नहीं मानतीं, चाहे वे कितनी ही कठिनाइयों का सामना करें। उन्होंने कहा कि शिवानी की रचनाएं भारतीय समाज के घरेलू और कामकाजी महिलाओं के जीवन की अनकही सच्चाईयों का बेबाक चित्रण करती हैं। कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुल. पति प्रो. दीवान सिंह रावत ने संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कहा आज हिंदी साहित्य में पढ़ाई-लिखाई की परंपरा को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। लेखन में संख्या के बजाय गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। शिवानी के लेखन में पहाड़ी जीवन, संस्कृति और पर्यावरण को प्रस्तुत करने का जो तरीका है, वह हिंदी साहित्य में अनूठा है।

वहीं, साहित्य अकादमी के सामान्य परिषद सदस्य प्रो. देव सिंह पोखरिया ने शिवानी के साहित्य के महत्व पर जोर देते हुए कहा, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज की समस्याएं, विशेषकर महिला संबंधी मुद्दे, शिवानी की रचनाओं में प्रमुखता से आए हैं। उनका लेखन नारी समाज के साथ गहरी संवेदनशीलता साझा करता है। कार्यक्रम के दौरान साहित्यकार डा. रूपा सिंह और कथाकार रजनी गुप्त ने भी शिवानी के लेखन की सराहना की। डा. सिंह ने कहा कि शिवानी बीसवीं सदी की सबसे लोकप्रिय हिंदी पत्रिका लेखिकाओं में से थीं और भारतीय महिला आधारित उपन्यास लेखन में अग्रणी थीं। रजनी गुप्त ने कहा, शिवानी की कहानियाँ और उपन्यास पढ़ते हुए ऐसा लगता था जैसे वे कभी खत्म न हों। उनके लेखन में गहरी संवेदना और पात्रों का जीवन के प्रति रियलिस्टिक दृष्टिकोण नज़र आता है। एसएसजे विश्वविद्यालय अल्मोड़ा के पूर्व कुलपति प्रो. जगत सिंह बिष्ट ने शिवानी के लेखन की विशिष्टता पर चर्चा करते हुए कहा, शिवानी का लेखन न तो यथार्थ से घृणा करता है, न ही भावुकता में बहता है। उनका उद्देश्य जीवन को समग्र रूप में समझना और उसे प्रस्तुत करना था। संगोष्ठी में कुमाऊं विश्व. विद्यालय के प्रो. निर्मला ढैला बोरा, डा. दिनेश कर्नाटका, डा. अनिल कार्की और अन्य शिक्षाविदों ने भी शिवानी के लेखन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। इस मौके पर साहित्य अकादमी के उपसं. चव डा. देवेंद्र कुमार देवेश और महादेवी वर्मा सृजन पीठ के निदेशक प्रो. शिरीष कुमार मौर्य ने संगोष्ठी की सफलता पर खुशी जाहिर की। संगोष्ठी में साहित्य, समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श के साथ शिवानी के योगदान को नए दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और आयोजन के समन्वयक मोहन सिंह रावत के संचालन में हुआ।